Available online at http://www.nrjp.co.in

Journal of Management Science, Operations & Strategies
Vol. 4, Issue, 03. 55-59p, Dec, 2020

National Research & Journal Publication

Review Article

उच्च शिक्षा में छात्र अंसतोष

संजीव कुमार
शोध छात्र
बरेली कालेज, बरेली

सारांश

प्रत्येक राष्ट्र की प्रगति की आधारभूत स्तंभ वहाँ की युवा पीढ़ी की सकारात्मक कार्यशैली एवं उसकी कार्यनिष्ठा पर केन्द्रित रहती है। किसी भी देश के छात्र विशेषकर उच्च शिक्षा के छात्र उस राष्ट्र के भविष्य को तय करने की आधारशिला के रूप में देखे जाते है अतः उनमें बढ़ते अंसतोष को चाहे उसका कारण कोई भी क्यों न हो उसे अच्छा संकेत के रूप में नहीं देखा जाता है, क्योंकि इसके बढ़ने पर युवा शक्ति में अपराध का जन्म होता है जो हिंसा, सार्वजनिक सम्पत्तियों आदि में बढ़ावा देने का मुख्य कारण बन जाता है। विगत वर्षो में उच्च शिक्षा में छात्र अंसतोष को व्यापक पैमाने पर देखा जा सकता है जिस कारण ये छात्र अवांछनीय गतिविधियों में शामिल हो जाते है और असंतोश के निस्तारण न होने के कारण उनका भविष्य एवं शिक्षा पूरी की पूरी नष्ट हो जाती है।

मुख्य शब्द– *छात्र असंतोश, अपराध, मूल्य, वातावरण, दोषपूर्ण।*

Copyright©2020,सजीव कुमार *This is an open access article for the issue release and distributed under the NRJP Journals License, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.*

प्रस्तावना –

छात्र अंसतोश वर्तमान में केवल किसी विशेष स्थान पर सीमित नहीं है यह समस्या आज पूरे विश्व की बड़ी समस्या बनकर उभर रही है। समाज के सामने छात्रों की समस्याएं उनके द्वारा किये जो रहे विभिन्न आन्दोलन, हड़ताल, एवं स्कूल, कालेजों विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षिक संस्थानों में कक्षाओं का बहिष्कार के रूप में सामने आ रहे है। विगत वर्षो में छात्र असंतोष के कारण आगजनी, हत्या, सार्वजनिक रूप से सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाने के समाचार भी आ रहे है। इस प्रकार के छात्र असतोंष पर किये गये विभिन्न शोधों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाले गये है, कि छात्रों में आज शिक्षकों के प्रति सम्मान, शिक्षण संस्थानों में नियत नियमों का पालन न करना, अनुशासनहीनता में संलग्न रहना आदि गतिविधियों को देखा जा रहा है। वर्तमान में छात्र शिक्षा और शैक्षणिक संस्थान के लक्ष्यों में न तो सहयोग कर रहे है और न ही अपनी रूचि दिखा रहे है। आधुनिक समय में छात्र संस्थानों द्वारा बनाये गये मानदण्डों का पालन करने में भी नीचा महसूस करते है, छात्र संस्थानों द्वारा बनाये गये मापदण्डों में बदलाव चाहते है और बदलाव न होने के कारण वे विरोध, प्रदर्शन करने लगते है और यही विरोध प्रदर्शन कभी–कभी आक्रामक आंदोलन के रूप प्राप्त कर लेते है, जिनका मूल उद्देश्य विनाश को बढ़ावा देना होता है। ऐसे आंदोलन प्रायः एक ओर राजनीतिक लोगों से प्रेरित होते है तो दूसरी ओर अन्य राजनीतिक व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थो की पूर्ति को पूरा करने के कारण छात्रों को बढ़ावा देते है।

आज उच्च शिक्षा के छात्रों द्वारा किये जाने वाले आंदोलनों के विभिन्न रूप देखे जा रह है, जिनमें मुख्य निम्न है जिनपर विश्वविद्यालय आयोग द्वारा भी अपनी सहमति व्यक्त की गई है –

- आर्थिक कारणों से, जैसे फीस वापस करने की मांग, छात्रवृत्ति की राशि बढ़ाना।
- प्रवेश,परीक्षा और शिक्षण से संबधित वर्तमान मानदंडों में बदलाव की मांग।
- कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की असंतोष जनक कार्यप्रणाली।
- विद्यार्थी और अध्यापक के बीच के संबधं, छात्रों व छात्र नेताओं के साथ उचित व्यवहार न हानेा, कक्षाओं की कमी या अध्यापकों द्वारा अध्यापन कार्य न करना।
- संस्थान के परिसर में अपर्याप्त सुविधाएं, अपर्याप्त छात्रावास, खराब भोजन, कैटींन की कमी आदि।
- व्यक्तिगत रूप से जो अपने जीवन से संतुष्ट नहीं हैं। अपने जीवन का कोई उद्देश्य नही बना पाए हैं और उन्हें पढ़ाई में पर्याप्त रूचि नहीं है।
- परिवार के प्रति लगाव नहीं है अर्थात जिनके परिवारों के साथ अतंरंग संबंधों का अभाव है।
- जो अपनी जाति, धर्म, भाषाई समूह के साथ पूरी तरह से मिले हुए नहीं है इसलिए वे अलग थलग है।
- परीक्षाओं के दौरन अनुचित साधनों का उपयोग करते हैं।
- अपने अध्यापकों व गैर शिक्षण कर्मचारियों को मान सम्मान नहीं करते हैं।

उच्च शिक्षा में छात्र असंतोष के कारण–

1. उच्च शौक्षिक सस्ंथान में शिक्षकों तथा प्रशासन के मध्य समन्वय व सवांद की कमी –

छात्र असंतोष का मुख्य कारण उच्च शैक्षिक सस्ंथान में शिक्षकों, छात्रों तथा प्रशासन के मध्य समन्वय व संवाद की कमी है। छात्रों को अपने संस्थान की सुविधाओं व सीमाओं का पता नहीं होता है। प्रशासन अपने आप को बड़ा व उच्च समझकर छात्रों से सवांद नहीं करता है जिस कारण सकारात्मकता का वातावरण नहीं बन पाता है। यह वातावरण ही असंतोष का कारण बनता है।

2. प्राथमिक से उच्च तक दोष शिक्षा प्रणाली –

प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में किसी भी तरह का जुड़ाव व संबधं नहीं है। विभिन्न राज्यों व केंद्रीय शैक्षिक संस्थानों में भी आपसी तालमेल का अभाव रहता है। पाठ्यक्रमों के निर्माण में असमानता, शिक्षकों की नियुक्ति के अभाव व नियमों का पालन नहीं करना, बच्चों की रूचि व भविष्य के अनुसार शिक्षा उपलब्ध नहीं होना, पाठ्यविषयवस्तु और समाज में संबंध की कमी इत्यादि है जो कि दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली की देन है।

3. जीवन का उद्दश्ेय विहीन और अनिश्चित भविष्य –

आज का छात्र उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद चाहता है कि उसका भविष्य रोजगारोन्मुख बने। शिक्षा का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, राजनैतिक संदर्भ केवल अब शिक्षा के व्यावसायीकरण की और बढ़ रहा है। शिक्षा अब विद्यार्थी को केवल यांत्रिक तौर पर विकसित कर रही है। शिक्षा जीवन का विकास करने की जगह अब नौकरीपेशा मनुष्य विकसित करने की और अग्रसर रहती है। इस तरह आज प्रत्येक छात्र के जीवननिर्माण के लिए नैतिक मूल्यों, सामाजिक व मानसिक विकास का उद्देश्य कहीं न कहीं पीछे रह गया है। इस तरह विद्यार्थी का सर्वागीणं विकास नहीं हो पाता जिससे पूरा जीवन ही अनिश्चित हो जाता है।

4. पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याएं –
पारिवारिक–आर्थिक समस्याएं व शिक्षा के निजीकरण से भी विद्यार्थियों में आर्थिक कारणों से असंतोश बढ़ता जा रहा हैं। समय पर फीस न देने, छात्रवृत्तियों का अभाव व महंगे प्राइवेट शिक्षण सस्थान के कारण विद्यार्थी भी चिंता व अवसाद से ग्रस्त हो जाता है।

5.कक्षाओं में बढ़ती विद्यार्थियों की संख्या–
उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जा रही हैं। विद्यार्थियों के अनुपात में सुविधाएं व अध्यापकों की कमी है जिससे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा भी उपलब्ध नही हो पाती है जो कि विद्यार्थी असंतोष का मुख्य कारण बनती है।

6. दोषपूर्ण शिक्षण विधियां –
सूचना व सप्रेंशण के दौर में शिक्षण विधियों में बहुत बदलाव आया हैं परंतु अभी भी हमारे अध्यापक अद्यतन शिक्षण विधियों से परिचित नहीं है। आई.सी.टी के दौर में शैक्षिक सस्थानों शोध मंथन, के पास इंटरनेट, स्मॉर्ट क्लासरूम व कम्प्यूटर की सुविधाएं कक्षा में उपलब्ध नहीं है। अध्यापकों को भी नई शिक्षण विधियों का प्रशिक्षण नहीं दिया जाता हैं जिससे विद्यार्थी विषयवस्तु की समझ नहीं बना पाता है जो कि आगे चलकर असंतोष का रूप धारण कर लेती हैं।

7.सक्षम व प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी–
अभी भी उच्च शिक्षा सस्थानों में तदर्थ व अनुबंध पर आधारित अध्यापकों की सख्या ज्यादा है जो कि पूरी तरह से सक्षम व प्रशिक्षित नहीं होते है। सेवाकालीन प्रशिक्षण की भी अध्यापकों के लिए कमी रहती हैं। इस तरह विषयविशेषज्ञ व प्रशिक्षित अध्यापकों की अनुपलब्धता से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती है जो विद्यार्थी में भविष्य को लेकर दिन रात की चिंता पैदा करती है।

8. विद्यार्थियों की यूनियन व संघों का अभाव –
उच्च शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थी यूनियन को सकारात्मक दृष्टिकोण से नहीं देखा जाता है। ज्यादातर संस्थानों में यूनियन व संघों का अभाव रहता है जिस कारण विद्यार्थी अपनी समस्याओं को प्रस्तुत नहीं कर पाते है। विद्यार्थी यूनियन से विद्यार्थियों को अपनी चितांओं व समस्याओं को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है जिससे उनमें असतोश की कमी आती है।

9. सांस्कृतिक गतिविधियों व सह–पाठ्य चर्या व रचनात्मक गतिविधियों की कमी–
उच्च शैक्षिक संस्थानों में सांस्कृतिक गतिविधियों का समय समय पर आयोजनों का होना अत्यन्त आवश्यक होता है जिससे विद्यार्थियों में रचनात्मकता, सहयोग व भाईचारा, समय का सदुपयोग, टीम वर्क आदि की भावनाएं पैदा होती है। एक दूसरे को समझने व मन से नीरसता को भगा कर उमंग पैदा करने का सबसे अच्छा उपाय सास्कृतिक गतिविधियों का आयोजन है ऐसे आयोजनों से मन शातं व सकारात्मकता की ओर बढ़ता है जिससे विद्यार्थियों में असतोष की कमी आती है।

10. दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली –
समय पर वार्षिक परीक्षा का आयोजन नहीं होना, परीक्षा परिणाम घोषित करने में देरी, परीक्षा परिणाम सही नहीं आना, मूल्याकंन में कमियां इत्यादि कारणों से भी विद्यार्थियों में असतोश बढ़ता है। प्रश्न पत्र विद्यार्थी के स्तर के अनुरूप नहीं बनाना। प्रवेश परीक्षाओं में पारदर्शिता नहीं होने इत्यादि कारणों से भी असंतोष बढ़ता है।

11. सामाजिक अनुशासनहीनता –
यदि विद्यार्थी समाज में अनुशासन सीखता है तो वह उसका पालन शैक्षिक संस्थान में भी करेगा यदि समाज में उत्पात, अहिंसा, साम्प्रदायिकता, असमानता आदि का माहौल रहता है तो विद्यार्थी का मन भी अशांत हो जाएगा जिसका प्रभाव हमें शैक्षिक सस्थान परिसर में दिखाई देगा।

12. शैक्षिक संस्थानों में पर्याप्त निधि व अनुदान की कमी –
उच्च शैक्षिक संस्थानों में पर्याप्त निधि व अनुदान की कमी रहती है, जिस कारण विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व सुविधाएं नहीं मिल पाती है। सरकारी सस्थानों में इस कारण अच्छे अध्यापकों की भर्ती भी नहीं हो पाती हैं ज्यादातर निजी संस्थानों में भी मंहगी शिक्षा होने के बावजूद प्रशिक्षित अध्यापक व सुविधाओं की कमी रहती है जिससे विद्यार्थियों में असंतोष पैदा होता है।

13. उच्च शिक्षा में सोशल मीडिया का प्रवेश –
आज के समय में मनुष्य की ज़िदगी का सोशल मीडिया अहम हिस्सा हो गया है। विद्यार्थी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं। समसामयिक गतिविधियों की जानकारी भी सोशल मीडिया के द्वारा विद्यार्थी बहुत ही तेजगति से हासिल कर रहे है। सोशल मीडिया के द्वारा विद्यार्थियों में गलतफहमियां, अशांति व असंतोष भी फैलाया जाता है। सोशल मीडिया पर दी गई जानकारियां व पोस्ट की वैधता को किस तरह जांचा जाएं ये एक चिंता का विषय बना हुआ है क्योंकि गलत पोस्ट के कारण विद्यार्थी भी उन पर विश्वास करके असंतोष का शिकार हो जाते है। स्मार्टफोन के कारण आज ज्यादातर विद्यार्थी अपना समय व्हाटसऐप, फेसबुक, यू टयूब इत्यादि पर अपना समय बर्बाद करता रहता है जिस कारण उसका स्वास्थ्य, समय, पढ़ाई पर भी प्रभाव पड़ता है।

14. जाति एवं धर्म का प्रभाव– आज उच्च शैक्षिक संस्थानों में जाति धर्म एक बड़ी समस्या बनी हुई है, जिस कारण छात्रों में असंतोष की भावना प्रबल हो जाती है।

सुझाव व समाधान

शैक्षिक संस्थानों में जातीय, धार्मिक, रंग, नस्लीय व लैंगिक तरह के कारण और प्रतिक्रियाएं उच्च शिक्षा नेतृत्व के लिए चितां का विषय बना हुआ हैं। जो सस्थान इस तरह के मुद्दो को नहीं सुनते है तो उच्च शिक्षा नेतृत्व के लिए बड़ी समस्या बन जाती हैं। तनाव के समय में, एक शांत और विश्वसनीय आवाज महत्वपूर्ण होती है। शांत माहौल में विद्यार्थियों में विश्वास को विकसित करने की जरूरत है। यदि संस्थान में जातीय, धार्मिक, रंग, नस्लीय व लैंगिक तरह के भेदभावों पर कोई असतोश व आंदोलन होता है तो संस्थान को इस तरह की समस्याओं के समाधान के लिए मानचित्र तैयार कर लेने चाहिए। विद्यार्थी व प्रशासन के बीच संचार व संप्रेषण के लिए माहौल हमेशा रहना चाहिए। संकट समाधान के लिए एक कोर टीम का गठन किया जाना अत्यन्त आवश्यक है जो समयानुसार अपना संपर्क बनाये रखे। आवश्यक सूचनाओं एवं छात्रों की जिज्ञासाओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें उच्च शैक्षणिक संस्थानों द्वारा अपनी वैबसाइट पर अपडेट करते रहना चाहिए। संस्थान के शैक्षिक व गैर शिक्षण स्टाफ को संस्थान में घूम घूम कर प्रबंधन का अभ्यास करना चाहिए। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों के विश्वास को प्राप्त करने और सुनने में मदद करती है। किसी भी तरह की समस्या आ जाने पर

संस्थान स्टाफ को विद्यार्थी असंतोष के बारे में बातचीत के दौरान विद्यार्थियों को सुनना चाहिए। विद्यार्थियों के साथ अनौपचारिक तौर पर रिश्ते बनाने चाहिए इसके लिए छात्रों के साथ कभी कभी सेमीनार इत्यादि का आयोजन किया जा सकता है।

शैक्षिक सस्थानों में नेतृत्व की प्रबंधन शैलियों से भी विद्यार्थी असतोष का पता चलता है। निरंकुश प्रबंधन शैली व लोकतांत्रिक प्रबंधन शैलियों के प्रभाव को स्पष्ट तौर पर विद्यार्थी असतोंश मे देख सकते है। सस्थानों में स्पष्ट प्रबधंन शैली का होना बहुत जरूरी है। सस्थान के परिसर मे अशांति व अंसतोष फैलने व बढ़ने की स्थिति में संस्थान को हमेशा अतिशीघ्र दूर करने का प्रबंध करना चाहिए। शैक्षिक संस्थानों में विविधता का माहौल बनाना चाहिए यदि कैंपस में विविधता नही है तो उसे बढ़ाने के लिए प्रयास होते रहने चाहिए। बहुसांस्कृतिक स्टाफिंग, विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों व कक्षाओं में, संस्थान व परिसर में होनी चाहिए।

विशेषकर उच्च शैक्षिक संस्थानों के छात्रों में राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति जाग्रत किया जाना अत्यन्त आवश्यक है इन राष्ट्रीय मूल्यों में मुख्य रूप से हमारी समान सास्कृतिक धरोहर, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, स्त्री–पुरूषों के बीच समानता, पर्यावरण का संरक्षण, सामाजिक समता, सीमित परिवार का महत्व और वैज्ञानिक तरीके के अमल की जरूरत आदि को शामिल किया जा सकता है। इनके जन जागरण के लिए शैक्षिक कार्यक्रम धर्मनिरपेक्षता जो मूल्यों के अनुरूप हो आयोजित किये जा सकते है।

आज वैश्वीकरण के दौर में हम केवल अपनी संस्कृति की जानकारी तक ही सीमित नहीं रह सकते है। विभिन्न देशों की संस्कृति, आचार–विचार व धर्म सबंधी मूल्यों व आदर्शो का ज्ञान व समझ भी विश्वविद्यालय स्तर पर देनी जरूरी है। सहपाठ्यक्रम गतिविधियों के आयोजन से विद्यार्थियों में मनोरंजन व आपसी समझ को बढ़ावा मिलता है। वर्तमान परिवश को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा का स्वरूप समावेशी होना चाहिए। लड़कियों व महिलाओं की शिक्षा, अनुसूचित जाति व जनजातियों की शिक्षा, शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े हुए दूसरे वर्ग व क्षेत्र, अल्पसंख्यक, शारीरिक रूप से चुनौती पूर्ण बच्चें आदि सभी को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालयों में सुविधाएं प्रवेश से लेकर पास होने तक विशेष तौर पर उपलब्ध होनी चाहिए; ताकि इन वर्गो के बच्चें पढ़ें व समाज के विकास में साथ चलकर हाथ बटा सकें। पूरी शिक्षा व्यवस्था समाज की समस्याओं, जरूरतों व भविष्य पर आधारित होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी शिक्षा पूरी करने के बाद समाज के विकास में योगदान दे सकें, इस कार्य के लिए समुदाय के सदस्यों को भी पाठ्यक्रम निर्माण और शैक्षिक व सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारत में सामाजिक आन्दोलन
– घनश्याम शाह
2. समाजिक समस्याएं
– राम आहूजा
3. भारतीय शिक्षा का विकास एवं सामाजिक समस्याएं
– डॉ. मालती सारस्वत
4. सोशयोलॉजी ऑफ एजुकेशन
– चितनिश सूमा
5. कल्यान परिवर्तन
– डॉ नीलम ए चौबे
6. कास्ट रिलीजन एण्ड पावर इण्डिया टूडे दैनिक अमर उजाला दैनिक पंजाव केसरी
– सी0पी0अग्रवाल